French revolution of 1789

प्रश्न :- क्रांति के पूर्व फ्रांस की सामाजिक, आर्थिक, तथा राजनैतिक ~~धार्मिक~~ दशा का वर्णन करें। इससे क्रांति के उत्पत्ति और विकास में कहाँ तक सहायता मिली?

उत्तर :- विश्व इतिहास में 1789 ई० की फ्रांसीसी ~~क्रांति~~ राज्य क्रांति एक युगांतकारी घटना मानी जाती है। इसने सदियों से चली आ रही अपमानजनक एवं घृणित सामन्तवादी व्यवस्था के अवशेषों तथा कुलीन विशेषाधिकार, भ्रष्ट नौकरशाही और निरंकुश राजतंत्र को खत्मकर राष्ट्रीयता, लोकतंत्र, और उदारवाद का बीजारोपण किया जिससे एक नये युग का सूत्रपात हुआ। मानवाधिकारों की घोषणा और फिर व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व के सिद्धान्त को सर्वप्रथम प्रतिपादित कर इस क्रांति ने मानवता का अमर संदेश प्रदान किया।

साधारणतया किसी भी देश में क्रांति का प्रस्फुटन उस स्थिति में होता है जब उस देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था पतनोन्मुख होकर उस हद तक पहुँच जाती है जिसे बर्दाश्त किया जाना वहाँ के जनसाधारण के लिए मुश्किल हो जाता है। जन साधारण की कठिनाईयाँ असंतोष को जन्म देती है और यह असंतोष अन्ततः क्रांति का मार्ग प्रशस्त करता है।

1789 ई० ~~की फ्रांसीसी राज्य क्रांति~~ में फ्रांस की स्थिति इससे कुछ विपरीत नहीं थी। लेकिन ध्यान देने लायक बात यह है कि इस समय फ्रांस यूरोप का सबसे प्रगतिशील देश था और इसी प्रगति ने फ्रांस को विरोधाभासों से पूर्ण कर डाला था। इसके चलते वहाँ के समाज में कई विसंगतियाँ व्याप्त हो गई थी। समाज का नेतृत्व धीरे-धीरे मध्यम वर्ग बुद्धिजीवियों के हाथों में आ रहा था। ये मध्यम वर्ग के लोग जो बौद्धिक रूप से परिष्कृत थे, अपनी कठिनाइयों को दूर करना चाहते थे और राजा से यह उम्मीद करते थे कि वह समाज में व्याप्त असमानता एवं शोषण-शोषण को समाप्त कर प्रबुद्ध निरंकुशवाद की स्थापना करेगा। इस समय फ्रांस का कोई व्यक्ति क्रांति के लिए नहीं सोचता था, लेकिन जब घटना-चक्र ने समय को पीछे छोड़ना शुरु किया तो क्रांति ने यहाँ के सभी वर्गों के लोगों को लपेट लिया।

अतः इसके निम्नलिखित कारण थे प्रमुख थे :-

(A) राजनैतिक कारण :- क्रांति के पूर्व फ्रांस की राजनीतिक दशा अत्यन्त ही निराशापूर्ण थी और उसमें कहीं भी किसी प्रकार का सामंजस्य नहीं था। यह प्रणाली विकृत और दोषपूर्ण थी। शासन बेढंगा और दोषपूर्ण था। अतः राजनीतिक कारणों का निम्नप्रकार से अध्ययन किया जा सकता है :-

(1) निरंकुश राजतंत्र :- राजतंत्र की निरंकुशता फ्रांस की राज्य क्रांति का एक महत्वपूर्ण कारण था। यद्यपि फ्रांस की निरंकुश राजतंत्र की परंपरा बहुत पुरानी

थी। मध्यकाल में जब सम्पूर्ण यूरोप में सामंतवादी व्यवस्था प्रचलित थी, उस समय चौदहवाँ लुई ने उस सामंती व्यवस्था को नष्ट करने के लिए एक अत्यन्त शक्तिशाली एवं संगठित सरकार की स्थापना फ्रांस में किया। वह एक योग्य शासक सिद्ध हुआ और फ्रांस में उसके नेतृत्व में एक अत्यन्त ही निरंकुश राजतंत्र का विकास हुआ। इस प्रकार प्रत्येक दृष्टिकोण से चौदहवें लुई का राजकाल फ्रांस के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उसके समय में फ्रांस की राजधानी पेरिस सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बिन्दु हो गया। चौदहवाँ लुई भी निरंकुश तरीके से शासन कार्य करता था इसलिए वह कहा करता था कि-
"I am state and my word is law."

अतः कहा गया है कि निरंकुश शासन कार्य सफलता पूर्वक एक योग्य शासक ही सम्भाल सकता है। परंतु चौदहवाँ लुई के उत्तराधिकारी 15वाँ लुई और उसके बाद 16वाँ लुई में इतनी योग्यता नहीं थी कि इस निरंकुश राजतंत्र को सफलता पूर्वक संचालन करें। वे केवल शासन के परंपरा पर अधिक ध्यान करते थे, योग्यता पर बहुत कम। परिणाम स्वरूप वे सामंतों एवं दरबारियों के हाथों का कठपुतली बन गये, जो अंत में उनका पतन का कारण बना। सोलहवाँ लुई कहा करता था कि "यह चीज इसलिए कानूनी है कि मैं इसे चाहता हूँ"। इस प्रकार फ्रांस का राजतंत्र काफी निरंकुश था। अंत में इसकी निरंकुशता ने ही इसका गला घोंट दिया।

(ii) राजप्रसाद का विलासी जीवन :- बात यहीं तक सीमित नहीं थी। चौदहवें लुई के उत्तराधिकारियों को प्रशासन के कार्य से बहुत कम ही मतलब रहता था। भोग-विलास, आमोद-प्रमोद आदि उनके जीवन के मूल लक्ष्य थे। राजा भी ही शान-शौकत से अपने चापलूस सामंतों के साथ "वर्साय" के राजमहल में रहता था। वर्साय का महल फ्रांस की राजधानी पेरिस से बारह मील दूर स्थित था और यहीं पर चौदहवें लुई ने अपने समय में तीस करोड़ रुपये खर्च करके एक अत्यन्त ही आलिशान और सुन्दर शीशमहल का निर्माण कराया था। यूरोप भर में वर्साय का राजप्रसाद अपने वैभव के लिए और शान-शौकत के लिए प्रसिद्ध था। इनकी विलासिता की अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यहाँ पर केवल सोलहवें लुई के सेवा में सोलह सौ दास तथा महारानी "मेरी एन्टोयनेत" के लिए लगभग पाँच सौ दासियाँ नियुक्त थीं। इसके अतिरिक्त सैकड़ों की संख्या में जागीरदार, सामंत केवल चापलूसी के लिए दरबार में पड़े रहते थे। कहा जाता है कि उस समय केवल 15 हजार केवल अंग व्यक्ति राजदरबार में रहा करते थे और इनमें आठ करोड़ रुपया सालाना खर्च होता था। इसके अतिरिक्त राजा अपने कृपापात्रों में दिल खोलकर रुपया बाँटता था। राजा अपने कृपापात्रों तथा चाटुकारों को काफी मात्रा में पारितोषिक, पेन्शन आदि दिया करता था। यह अनुमान लगाया जाता था कि 16वें लुई क्रांति पूर्व अपने सलाहकारों और चापलूसों में तीस करोड़ रुपया लुटाया

इसके अतिरिक्त वार्साय में रहने वाले सामन्त भी रहन-सहन में उसी के आदर्श का अनुसरण किया करते थे। उसी तरह महारानी भी फुलवारी वस्त्र शृंगार में अपार धन व्यय करती थी। वर्साय के आमोद-प्रमोद में पानी की तरह रुपैया बहाया जाता था। इस अपव्यय के कारण फ्रांस का राजदरबार उत्तरोत्तर दिवालिया होता जा रहा था।

इसके अतिरिक्त वार्साय का राजदरबार अपने कायदे-कानून और अदब-लिहाज, के लिए यूरोप भर में प्रसिद्ध था। इसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि दरबार के तौर तरीके इतने जटिल थे कि यदि राजा कभी राज-काज सम्भालना चाहता तो दरबार के कायदे-कानून को चलाने के लिए एक दूसरे राजा की आवश्यकता पड़ती थी। फ्रांस के राजा को तो वार्साय के जीवन से ही फुरसत नहीं मिलती थी कि वह राज्य के प्रशासन को चला सके।

(3) निरंकुश राजतंत्र पर नियंत्रण का अभाव! — उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि फ्रांस का राजतंत्र एक-दम निरंकुश तथा बे-जवाबदेह था। कभी-2 निरंकुश ~~[illegible]~~ शासनतंत्र पर भी कुछ नियंत्रण की आवश्यकता होती है। इसे एक दम भ्रष्ट और पतित होने से बचाने के लिए समय-समय पर कुछ नियंत्रण रखना भी जरूरी है अर्थात जब निरंकुशता अपनी सीमा को पार करने लगे तो कोई ~~संस्था~~ ऐसी संस्था हो जो किसी तरह उस पर अंकुश लगा सके। फ्रांस में इस प्रकार की कोई संस्था इस वक्त नहीं थी जो राजा के अधिकारों पर अंकुश रखती। यह बात ठीक है कि England की Parliament की तरह फ्रांस में भी एक संसदीय संस्था थी जिसको "Estates General" कहते थे, परन्तु 1614 के बाद से 175 वर्ष तक इसकी एक बार भी बैठक नहीं हुई थी और राजा मनमाने ढंग से अपना शासन चला रहा था। स्थिति ऐसी हो गई थी कि 1789 में जब Estates General के चुनाव की बात चली, तो कोई भी जीवित व्यक्ति यह नहीं जानता था कि इनका चुनाव और संगठन कैसे हो? अत एव इस बात की जाँच-पड़ताल के लिए एक आयोग की नियुक्ति की गई जिसने पुराने कागजातों के अध्ययन के बाद Estates General के संगठन आदि पर अपनी Report दी और तब जाकर उनका चुनाव हुआ।

किन्तु फ्रांस में राजा के अधिकारों पर कुछ सीमा तक अंकुश लगाने के लिए पार्लेमा नामक संस्था थी। पार्लेमा की संख्या फ्रांस में कुल 17 थी जिनमें पेरिस की पार्लेमा का काफी प्रभाव था। यह एक प्रकार का न्यायालय का काम करती थी। इसके न्यायाधीश वंशानुगत होते थे परन्तु राजा इनके पदाधिकारियों को रिश्वत देकर अपनी ओर मिला लेता था।

(4) सभी प्रकार के स्वतंत्रताओं का अभाव! — भाषण, लेखन, विचारों की अभिव्यक्ति तथा धार्मिक स्वतंत्रता से किसी भी शासन-पद्धति को काफी लाभ हो सकता है। निरंकुश शासन-पद्धति में भी इन स्वतंत्रताओं को काफी महत्व दिया जाता है जब सताई गई जनता को कोई रास्ता

नहीं मिलता था। वह क्रांति कर बैठती है। यदि कुछ मात्रा में उसे उपयुक्त सुविधाएं दे दी जाएं तो असंतोष दूर हो सकते हैं — एक तो कि निरंकुश शासनतंत्र के विरुद्ध जनता बोलकर कुछ समय के लिए अपनी गुस्से को शांत कर लेती है दूसरे की जनता की आलोचना सुनकर निरंकुश सरकार अपनी शासन व्यवस्था में सुधार कर सकती है। इससे राज्य तथा जनता दोनों को फायदा होता है। परंतु फ्रांस में उस समय किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं थी। जो भी व्यक्ति शासन तंत्र के खिलाफ कुछ बोलता था, उसे कठोरतम दंड दिया जाता था। उस समय ~~फ्रांस~~ फ्रांस में लेतर-दी-काशे नामक एक वारंट होता था जिसके द्वारा किसी को कुछ पूछे बिना गिरफ्तार किया जा सकता था। ऐसी कानून द्वारा मिराबो और वाल्तेयर की गिरफ्तारी हुई थी।

(5) कानूनों का जमघट ! — फ्रांस की कानूनी व्यवस्था में उसका एकरूपता नहीं थी। वहाँ के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार के लगभग चार सौ कानून प्रचलित थे। इन कानूनों के अनुसार जो बात एक जगह वैध मानी जाती थी, वही दूसरी जगह अवैध हो जाती थी। इस कारण न्याय-प्रशासन के क्षेत्र में सर्वत्र अराजकता फैली हुई थी। किसी को भी पता नहीं रहता था कि उसके मुकदमे का फैसला किस कानून के द्वारा होगा। इसे केटलबी ने कानून के क्षेत्र में — "महान अराजकता" के नाम से संबोधित किया है। कानून बनने भी नहीं पाते थे कि उसमें ~~संशोधन~~ संशोधन होने लगते थे तथा कुछ समय के बाद कोई और कानून बना दिया जाता जो पहले के विपरीत होता था। इतिहासकार हेजन ने लिखा है — " एक कस्बे में जो बात कानूनी और सही मानी जाती थी वही बात उस स्थान से पाँच मील से भी कम दूरी पर स्थित दूसरे कस्बे में नियम के विरुद्ध और गैरकानूनी समझी जाती थी।"

फौजदारी मामलों की न्यायपद्धति बड़ी ही विचित्र थी। मजिस्ट्रेट अपराधियों के बयान को गोपनीय ढंग से सुनता था और गवाहों को भी उसी प्रकार सुना जाता था। दण्ड की सीमा भी निश्चित नहीं थी। कभी उसी अपराध के लिए अत्यन्त कठोर और कभी अत्यन्त ही कम सजा दिया जाता था। न्यायालयों में न्यायकार्य कुलीन ही करते थे जो काफी क्रूर और घूसखोर थे।

(6) प्रान्तीय विभिन्नताएं ! — प्रान्तीय शासन के ख्याल से समूचा फ्रांस दो प्रकार के प्रान्तों में बंटा हुआ था। फ्रांस के प्राचीन ~~फ्रांस~~ प्रान्त जिसकी संख्या चौदह थी गावर्नमेंट कहलाते थे। इनका शासन राजा द्वारा नियुक्त गवर्नरों द्वारा होता था। दूसरे प्रकार के प्रान्त जिनकी संख्या छत्तीस (36) थी, जेनरलिटी

कहलाते थे। इनका शासन राजा द्वारा नियुक्त Intendent करते थे। दोनों तरह के प्रान्त अपने आन्तरिक शासन परम्परा के लिए काफी सचेत रहते थे। इन्टेन्डेन्ट के पद पर कुलीन वंश के लोगों की नियुक्ति होती थी। वे प्रान्तों के वास्तविक शासक होते थे, लेकिन व्यवस्थित तरह शासन को चला नहीं पाते थे। इस कारण स्थानीय शासन का कार्य धीरे-धीरे शिथिल होता जा रहा था।

इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के भ्रष्टाचार शासन व्यवस्था में फैल चुकी थी। व्यापारियों, किसानों इत्यादि का शोषण इस प्रकार हो रहा था कि व्यापारी वर्ग का व्यापार पंगु हो रहा था। उनपर तरह-तरह के आर्थिक प्रतिबन्ध थे। फ्रांसीसी राजनीतिक व्यवस्था के इस अध्ययन के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि क्रांति के अवसर पर फ्रांस के किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं थी। राजनीतिक दृष्टिकोण से सारा देश अराजकता की स्थिति में पड़ा हुआ था। कैटलबी ने ठीक ही कहा है — "विशेषाधिकार, रियासतें, विमुक्ति-कानून नहीं फ्रांसीसी समाज के आधार थे। उनके शासकों की नीति इच्छाएँ थी, सिद्धान्त नहीं। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि क्रांतिकारियों की सबसे पहली मांग "संविधान" के लिए ही थी जिसमें उनका अभिप्राय था कि देश में कुछ व्यवस्था, कुछ संगठन हो।

(B) सामाजिक व्यवस्था:— क्रांति के पूर्व फ्रांसीसी समाज का आधार सामंतवादी प्रथा थी, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का कार्य उसके जन्म के अनुसार बँटा हुआ था। जो व्यक्ति जिस घराने में पैदा होता, उसकी स्थिति वैसी ही हो जाती, चाहे उसमें कोई योग्यता हो या नहीं। इस प्रकार फ्रांस का समाज स्पष्टतः दो भागों में विभाजित था - (i) सुविधा प्राप्त वर्ग (Privileged class) और (ii) दूसरा सुविधाहीन वर्ग (Unprivileged class)। सुविधा प्राप्त वर्ग में पादरी और कुलीन-सामंत आते थे तथा सुविधाहीन वर्ग जनसाधारण था जिसमें मध्यमवर्ग के लोग भी सम्मिलित थे जो इस प्रकार थे।—

(i) पादरी वर्ग!— चूँकि फ्रांस अभी मध्यकालीन स्थिति से गुजर रहा था इसलिए समाज में धर्म की प्रधानता थी। यही कारण है कि चर्च फ्रांस की बहुत ही प्रमुख संस्था थी और इसके पदाधिकारी अर्थात पादरी, समाज के सर्वोच्च शिखर पर थे। पादरियों की स्थिति इतनी आदर्श थी कि उन्हें प्रथम इस्टेट (first estate) के नाम से पुकारा जाता था।

उस समय फ्रांस में रोमन कैथोलिक चर्च की प्रधानता थी और फ्रांस में इनका बोलबाला था। कहा जाता है कि फ्रांस का चर्च राज्य के अन्दर राज्य के समान था। इनकी एक अलग ही सरकार थी, जो चर्च की भूमि, सम्पत्ति, का प्रबन्ध करती थी। इसका अपना संगठन था, अपने न्यायालय थे और धन प्राप्ति के भी अपने स्रोत थे।

इनको कर (Tax) से छुटकारा ली थी। साथ ही साथ लोगों पर विशेष कर (Tax) लगाने का अधिकार भी था। चर्च टाईथ (Tithe) नामक कर वसूला करता था।

चर्च की सम्पत्ति और भूमि पर राजा को कर लगाने का कोई अधिकार नहीं था। परन्तु राजा को ये स्वेच्छा से कुछ धन देते थे, जिन्हें राजा उपहार के रूप में इन्हें वापस लौटा देता था। कर का अधिकांश भाग चर्च के प्रधाधिकारी रख लेते थे। साधारण अधिकारियों को नाममात्र का लाभ मिलता था।

इसके अतिरिक्त चर्च के पास अपार सम्पत्ति थी। कहा जाता है कि देश के 5वाँ हिस्से के बराबर सम्पत्ति केवल चर्च के अधिकार में थी। इस सम्पत्ति का उपयोग पादरीवर्ग भोगविलास में करते थे।

इन पादरियों में दो श्रेणी थी। एक बड़े पादरी जो कुलीन घराने से निर्वाचित होते थे। वे अपना सारा जीवन भोग विलास में बिताया करते थे। धर्म से उन्हें बहुत कम वास्ता था। जबकि पादरियों में एक वर्ग जनसाधारण का था, जो छोटे देहातों में छोटे-छोटे गिरजाघरों में रहकर भगवान का भजन करते थे। सच्चे अर्थों में यही वास्तविक पादरी थे, जिनका जीवन साधारण था। परन्तु इनको कोई सुविधा प्राप्त नहीं थी, जिसके कारण ये बड़े पादरियों से जलते थे। यही कारण है कि जब क्रान्ति हुई तो इन पादरियों ने जनसाधारण का साथ दिया।

उपर्युक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि पादरी वर्ग भी कुलीनों की भाँति राजदरबार में रहते थे, जिनका अधिकांश समय षड्यन्त्रों में बीतता था। पादरियों के इसी स्थिति को देखकर स्वयं लुई सोलहवाँ व्यंग करते हुए कहा था कि — "हमें कम से कम पेरिस में एक ऐसा आर्चबिशप रखना चाहिए जो ईश्वर में विश्वास रखता हो।"

(ख) कुलीन वर्ग — उपर्युक्त सुविधाप्राप्त वर्ग में दूसरा स्थान कुलीनों का था, जो द्वितीय स्टेट कहलाते थे। उच्च पादरियों की तरह ही इस वर्ग के लोगों को भी सुविधायें प्राप्त थीं। उस समय समस्त फ्रांस में कुलीनों की कुल संख्या प्रायः दो लाख चालीस हजार थी। संख्या में कम होने के बावजूद राज्य में इस वर्ग की स्थिति बहुत ऊँची थी। उनके समक्ष जनसाधारण का कोई महत्व नहीं था। इन कुलीन वर्ग में धनी और गरीब दोनों थे, परन्तु दोनों में एक बात की समानता थी। वे किसानों को चूसते थे। जनसाधारण से ये सामन्त तरह तरह के बेगारी और सामंती कर वसूलते थे। कृषकों को सप्ताह में छः दिन अपने जागीरदारों के अधीन काम करना पड़ता था। इस प्रकार इन्होंने जनसाधारण का अनेकों प्रकार से शोषण किया करते थे।

(3) जन साधारण वर्ग :— ~~सामन्त~~ फ्रांस के पुरातन व्यवस्था में जन साधारण वर्ग, जिसको तृतीय स्टेट कहा जाता था, काफी तंग था। फ्रांस का सुविधा हीन वर्ग, गुंगा वर्ग तथा असम्मानीय नहीं लोग थे। इनके सम्बन्ध में यह कहावत प्रचलित है कि फ्रांस में राजा लोग और सामन्त लड़ते हैं, पादरी प्रार्थना करते हैं और जन साधारण उनके लिए धन जुटाता है। क्योंकि जन साधारण ही फ्रांस की अर्थव्यवस्था का खिवैया था परन्तु उन्हें ~~नाममात्र को ही सुविधा~~ कोई अधिकार एवं सुविधा राज्य के तरफ से नहीं प्राप्त था। जनसाधारण थी इस वर्ग के अन्तर्गत कृषक, मजदूर, शिल्पी, घरेलू कर्मचारी, तथा मध्यम वर्ग के व्यापारी और बुद्धिजीवी आते थे इन लोगों की संख्या फ्रांस में काफी अधिक थी परंतु ये लोग शासित थे मुट्ठी भर लोग इनपर शासन करते थे।

कृषक वर्ग में अनेक प्रकार के कृषक थे जिन्हें तरह तरह का कर ~~देना~~ देना पड़ता था। ~~कि~~ इनमें अधिकांश मध्यकालीन मजदूर थे। फ्रांसीसी क्रांति के सम्बन्ध में प्रायः यह कहा जाता है कि यह एक मध्यम वर्गीय क्रांति थी, जिसके जड़ में आत्मगौरव था। स्वयं नेपोलियन ने भी कहा था कि "अब सामंतों का घमण्ड सर चढ़ कर बोलने लगा, तब फ्रांस में जनसाधारण के क्रांति की थी।" इससे स्पष्ट होता है कि मध्यम वर्ग की स्थिति अच्छी थी, परन्तु समाज में उन्हें आदर प्राप्त नहीं था। इस आत्मगौरव ने क्रांति के लिए उन्हें प्रेरित किया।

(C) आर्थिक कारण :— क्रांति के अवसर पर फ्रांस की आर्थिक स्थिति एकदम अस्त-व्यस्त हो गई थी। इसका मुख्य कारण राजमहल का अपव्यय और विदेशी युद्ध थे। प्रति वर्ष आय से अधिक व्यय होता था। इसी स्थिति पर व्यंग्य करते हुए महान इतिहासकार हेज ने लिखा है कि — "उस समय राज्य की आय के अनुसार व्यय निश्चित न करके आय को ही व्यय के अनुसार निश्चित किया जाता था।" फ्रांस में करव्यवस्था मनमाने ढंग से कर लगाया जाता था। राज्य की कर व्यवस्था अत्यन्त ही पक्षपात पूर्ण एवं असमानता के सिद्धान्त पर निर्मित होने के कारण अत्यन्त दूषित हो चुकी थी। कर मनमाने तो लगाया जाता ही था, बल्कि उसके वसूलने का तरीका भी अनुचित था। कर वसूलने का कार्य सामन्त ठेकेदारों को दे दिया जाता था, वह मनमाना रकम जनता से वसूलता था और उसमें से निश्चित रकम ही राज्य के खजाने में जाता था, शेष उस ठेकेदार के झोली में।

इस तरह की असंतोषजनक और अन्यायपूर्ण करव्यवस्था तथा फिजूल खर्ची के कारण राज्य का खजाना खाली पड़ने लगा था। इस स्थिति में फ्रांस के राजाओं को मितव्ययिता से काम लेना चाहिए था

— चली गयी, परन्तु वे अपने इस अधिकार में कमी तथा आचरण में सुधार के विरोधी थे। इस प्रकार विशेषाधिकारी कायम होने पर सरकार की ओर से ~~से~~ कोई किया जा सकेगा? कहा जाता है कि क्रांति के अवसर पर फ्रांस की सरकार पर साठ करोड़ डॉलर का ऋण था जिस पर ब्याज देना पड़ता था और बजट में प्रति वर्ष 2½ करोड़ घाटा होने लगा था। नये करों से जो आमदनी होती थी, उसका अधिकांश भाग ब्याज में ही चला जाता था। इस प्रकार राज्य हमेशा आर्थिक रूप से दिवालियापन की स्थिति में था।

इसी समय औद्योगिक क्रांति के कारण बेकारी की समस्या प्रकट होने लगी थी। इस कारण फ्रांस में आर्थिक संकट उत्पन्न हो गई थी। औद्योगिक क्रांति के कारण हाथ से काम करने वाले शिल्पी, कारीगर लोग मशीनों से प्रतियोगिता नहीं कर सकते थे। इस कारण फ्रांस में कई लघु एवं कुटीर उद्योग बंद हो गये और देश में बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गयी। इस प्रकार बेरोजगारों की एक बड़ी फौज रोजगार की खोज में पेरिस पहुंचने लगी थी। फ्रांस में जिस समय क्रांति शुरू हुई उस समय ये लोग क्रांति को आगे बढ़ाने में काफी योगदान किया था। बेकार लोगों को तैयार किया गया और उग्रवादी नेताओं ने इन्हें खूब भड़काया और क्रांति के लिए उत्तेजित किया।

(1) आर्थिक संकट — इस समय ऐसा लग रहा था कि मानो प्रकृति भी जनता को क्रांति के लिए ~~काम~~ नयी नयी समस्याओं के द्वारा काम करने के लिए प्रेरित कर रही थी। 1730 से 1780 ई० तक की अवधि में फ्रांस में आर्थिक विकास अवश्य हो गया था। पर इसी अवधि में बराबर आर्थिक संकटों का समय भी आता ही रहता था और यह फ्रांस के विशेषाधिकार हीन वर्गों के लिए मुसीबतों का कारण बन जाता था। ऐसे ही संकटों में एक गम्भीर संकट फ्रांस को 1787 ई० में ~~करना पड़ी~~ खराब पैदावार के कारण झेलना पड़ा। एक ओर बढ़ती हुई महंगाई, तथा विधानों का अभाव, आर्थिक मंदी तथा सामन्तों के लूट-खसोट ने अजीब वातावरण बना दिया और फ्रांस में क्रांति के लिए जन साधारण उत्तेजित हो गये।

(2) सेना में असंतोष: — बेरोजगारी तथा अर्थ समस्याओं से तंग आकर फ्रांस के युवकों को सेना में भर्ती होना पड़ा। परन्तु खराब भोजन, समय पर वेतन नहीं, अस्त्र-शस्त्र की कमी के कारण सेना में असंतोष था। यही कारण है कि क्रांति के समय सैनिकों की सहानुभूति क्रांति के प्रति थी।

इस प्रकार सम्पूर्ण फ्रांस की समाज में असमानता, असंतोष, अन्याय का अंधकार छाया हुआ था। जैसा कि केटलबी ने कहा है कि — "फ्रांस का शासन और संगठित अनुदारता और उदारता, रोष और उत्प्रेरणा का वह सम्मिश्रण उपस्थित करता था जो क्रांति के लिए सर्वश्रेष्ठ सामग्री प्रदान करता है।"